सूरतें
(21वीं और 23वीं रात)

بسم الله الرحمٰن الرحيم ❑

وَالضُّحَىٰ . وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ

वज़्ज़ुहा वल्लैलि इज़ा सजा

(ज़िन्दगी में दिन और रात की तरह आसानियाँ और कठिनाईयाँ आते ही रहते हैं) दिन का उजाला और छा जाने वाली रात की सियाही गवाह हैं कि

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ

मा वद्-द-अ़-क रब्बु-क वमा क़ला

त़ुम्हारे रब ने त़ुम्हें न तो छोड़ा और न वह बेज़ार (अप्रसन्न) ह़ुआ

وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ

वलल्-आख़ि-रतु ख़ैरुल्-ल-क मिनल्-ऊला

और यकीनन बाद में आने वाला दौर तम्हारे लिए पहले से बेहतर है

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ

व लसौ-फ़ युअ़्ती-क रब्बु-क फ़तर्ज़ा

और जल्दी ही तुम्हारा रब तुम्हें अता (प्रदान) करेगा कि तुम राज़ी हो जाओ

بسم الله الرحمٰن الرحيم ❑

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ

अलम् यजिद्-क यतीमन फ़-आवा

क्या ऐसा नहीं कि उसने तम्हें बेसहारा पाया तो ठिकाना दिया?

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ

व व-ज-द-क ज़ाल्लन् फ़-हदा

और तम्हें रास्ते से अनजान पाया तो रहनमार्ड की (मार्ग दिखाया)?

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ

व व-ज-द-क आइलन् फ़-अग़ना

और तुम्हें ग़रीब पाया तो बेनियाज़ कर दिया?

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ

फ़अम्मल्-यती-म फ़ला तक़्हर

तो तुम अनाथ या बेसहारा पर सख़्ती मत करना,

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ

फ़अम्मस्साइ-ल फ़ला तन्हर

और जो माँगे उसे झिड़की न देना

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ

व अम्मा बिनिअ़्मति रब्बि-क फ़हद्दिस्

और जो तुम्हें रब की नेअमत है, उसे बयान करते/करती रहो

सूरतें
(25वीं और 27वीं रात)

❑ **بسم الله الرحمٰن الرحيم**

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ

अलम् नशरः ल-क सद्रक

क्या ऐसा नहीं कि हम ने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल दिया?

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ

व व-ज़अ़्ना अ़न्-क विज़्रक

और तुमपर से तुम्हारा बोझ उतार दिया

الَّذِي أَنقَضَ ظَهْرَكَ

अल्लज़ी अन्-क़-ज़ ज़ह्रक

जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रहा था?

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

व रफ़अ़्ना ल-क ज़िक्रक

और तुम्हारे लिए तुम्हारे ज़िक्र को बुलन्द (ऊँचा) कर दिया?

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا

फ़ इन्-न मअ़ल्-उ़स्रि युस्रा

तो यक़ीनन कठिनाई के साथ आसानी भी है

❑ **بسم الله الرحمٰن الرحيم**

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا

इन्-न मअ़ल्-उ़स्रि युस्रा

यक़ीनन कठिनाई के साथ आसानी भी है

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ

फ़ इज़ा फ़रग़्-त फ़न्सब

तो जब फ़ारिग़ हो तो डट जाओ

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَب

व इला रब्बि-क फ़र्ग़ब

और अपने रब से लौ लगाओ

सूरतें
(29वीं रात)

بسم الله الرحمٰن الرحيم ❑

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ

इन्ना अअ्तैना-क कल्कौसर

बेशक हम ने तुम्हें ज़बरदस्त भलाई अता फ़रमा दी

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ

फ़सल्लि लिरब्बि-क वन्हर

तो फिर तुम अपने रब्ब के लिये नमाज़ पढ़ो और क़ुरबानी करो

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ

इन्-न शानि-अ-क हुवल् अब्तर

बेशक तुम्हारे दुश्मन ही का नाम व निशान मिट जाएगा

بسم الله الرحمٰن الرحيم ❑

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ

इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्-फ़त्-हि

जब अल्लाह की मदद और फ़तह (विजय) आ जाए

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا

व रऐतन्ना-स यद्ख़ुलू-न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा

और तुम लोगों को फ़ौज दर फ़ौज अल्लाह के दीन में दाख़िल होते देखो

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا

फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क वस्तग़्फ़िर-हु , इन्नहू का-न तव्वाबा

तो अपने रब्ब की हम्द के साथ तस्बीह करो और उस से इस्तग़फ़ार करो। बेशक वह बहुत तौबा क़ुबूल फ़रमाने वाला हैं।